www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 1, 16-18

Article ID: 136

चने की जैविक खेती केसे करे

अंगद पटेल

कार्यक्रम अधिकारी, वागधारा, बांसवाड़ा, (राजस्थान) 327001,भारत

भारत मै चने का अपना एक महत्त्व है और अगर हम राजस्थान,मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र की बात करे या ऐसा क्षेत्र जहा पर पानी की समस्या है तो इसका महत्त्व और बढ जाता है चने की फसल कम पानी की फसल है और किसान इसे आसानी से उगा सकते है इन सब के अलावा इसके कई तरह के पकवान भी बनते है

मिट्टी

चने की फसल के लिए उचित जल निकास वाली मध्यम काली मृदा, दोमट, व बलुई दोमट मृदा सर्वोत्तम मानी जाती है साथ ही ऐसी भूमि जहा पर पहले धान की खेती की गई हो व उचित नमी हो ऐसी भूमि में चने की खेती आसानी से की जा सकती है जल भराव वाली मृदा इस की खेती के लिए उचित नहीं मानी जाती है।

जलवायु

चने की फसल ठंडी जलवायु की फसल है इस फसल के लिए पाला अत्याधिक नुकसान पहुचता है अगर फूल आते समय या दाना बनते समय पानी गिरता है तो इसकी उपज अच्छी नहीं हो पाती है।

खेत की तैयारी व खाद की मात्रा

अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े मै सर्वप्रथम मिट्टी पलट हल से एक जुताई करने के बाद एक या दो जुताई देशी हल से कर के मिट्टी को भुरभुरा बना लेते है। इसी समय पर इसमें 8 – 10टन/हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद देते है और अगर बिना सिचाई के ही सीधे चने की बुवाई करनी हो तो मिट्टी पलट हल से जुताई ना कर के देशी हल से एक जुताई के बाद बुवाई कर दी जाती है।

बुवाई का समय व बीज की मात्रा

चने की बुवाई के लिए मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर का समय सबसे अच्छा होता है।

बीज को बुवाई से पहले बीजम्रत से उपचारित करना चाहिए।

यदि बिना सिचाई के चने की बुवाई करनी हो तो 60 – 70 किग्रा./हेक्टेयर बीज पर्याप्त होता है और यदि सिचाई कर के चने की बुवाई करनी हो तो 80 – 90 किग्रा./हक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बीज की बुवाई के पूर्व उसका उपचार करना अत्यंत आवश्यक है क्योकि इस से बहुत से रोगों से फसलो को बचा सकते है।

फसल अंतरण

चने की फसल मै लाइन से लाइन की दुरी 30 सेमी. व पोधे से पोधे की दुरी 10 सेमी. रखनी चाहिए साथ ही इसको 5 – 8 सेमी की गहराई पर बोना चाहिए।

सिचाई

चने की फसल को मुख्तया तीन सिचाई देनी चाहिए पहली सिचाई शाखा निकालते समय (25 – 30 दिन) दूसरी सिचाई फूल आते समय (45 – 50 दिन) व तीसरी सिचाई फली बनते (60 - 65 दिन) समय करनी चाहिए।

दो सिचाई उपलब्ध होने पर पहली बुवाई के 30 – 35 दिन व दूसरी सिचाई बुवाई के 60 - 65 दिन बाद करनी चाहिए।

एक सिचाई उपलब्ध होने पर बुवाई के 30 – 35 दिन बाद करनी चाहिए।

ऊपरी शाखाओ को तोडना

बुवाई के 30 – 40 दिन बाद चने की ऊपरी शाखाओ को तोड़ देना चाहिए इससे चने की और ज्यादा शाखाये निकलती है जिस से इसकी उपज मे बढोतरी होती होती है।

खरपतवार नियंत्रण

चने की फसल मै खरपतवार नियंत्रण आवश्यक है इस के लिए बुवाई के 20 दिन व 40 दिन के

अन्तराल पर दो बार हाथ से खरपतवार निकलना चाहिए।

रोग

(1) उकठा – चने की फसल का एक प्रमुख रोग है इसके कारण फसल को अत्यधिक नुकसान होता है इस रोग मै सबसे पहले धीरे धीरे पौधों की जड़े सूखने लगती है जिसके कारण पौधों की पत्तिया पीली पड़ जाती है और अंत मे पूरा पौधा सूख के मर जाता है।

रोकथाम -

- रोग की रोकथाम के लिए गर्मी में गहरी जुताई कर के खेत को खाली छोड़ देना चाहिए।
- फसल चक्रण एक अच्छा तरीका है इस रोग से फसल को बचाने के लिए।
- बीमारी रहित बीजो को बोना चाहिए।
- अरंडी की खली 500 किग्रा./हक्टेयर की दर से डालनी चाहिए बुवाई के समय।
- *Trichoderma* 4 ग्राम/किग्रा. की दर से बीज को उपचारित कर के बोना चाहिए।

(2) Ascochyta blight -

इस रोग के प्रकोप के कारण पौधों की फली,पत्तियों व तनो पर धब्बे बन जाते है।

रोकथाम –

- रोग प्रतिरोधक जातियों का चयन करना चाहिए।
- इस रोग की रोकथाम के लिए गौ मूत्र का स्प्रे सर्वोत्तम माना जाता है इसके लिए 1 :20 के अनुपात में पानी में मिला कर छिडकाव करे।

कीट –

फली बेधक -

यह चने की फसल का प्रमुख कीट है इसके प्रकोप से फसल में 20 – 30 % तक का नुकसान देखा गया है यह कीट फली में छेद कर के दाना खा जाती है।

इस कीट की रोकथाम के लिए दशपर्नी दवा के 2 से 3 छिडकाव से फली बेधक कीट के प्रकोप को रोका जा सकता है।

कटाई व उपज

चने की फसल की कटाई मार्च के दुसरे सप्ताह से प्रारंभ हो जाती है जब चने की पत्तिया सूख कर गिरने लगती है तब इसकी कटाई प्रारंभ कर देनी चाहिए फसल को ज्यादा सूखने देने पर फली झाड़ना प्रारंभ हो जाती है।

फसलानुकुल वातावरण होने पर फसल की उपज 20 – 25 क्विंटल/हक्टेयर तक प्राप्त हो जाती है।

जैविक दवाई घर पर केसे बनाये व उनका कितना उपयोग करे -

(1) अदरक- मिर्ची का घोल – इसे बनाने के लिए 1 किग्रा. वेशरम(Ipomoea carnea) की पत्तिया,500 ग्रा. मिर्ची, 500 ग्रा.अदरक, 5 किग्रा. नीम की पत्तिया व 10 लीटर गाय के मूत्र को ले कर इसे इतना उबलते है ताकि यह घोल आधा बचे इस घोल का 2 से 3 लीटर 100 लीटर पानी में मिला कर एक एकड़ में छिडकाव करना चाहिए।

(2) गाय का मूत्र – गाय का मूत्र व पानी का अनुपात 1:20 में मिला कर छिडकाव करना चाहिए इससे रोग व कीट तो नियंत्रित होते ही है साथ ही फसल की बढवार भी अच्छी होती है।

(3) दशपर्नी - दशपर्नी बनाने के लिए नीम की 5 किग्रा.पत्तिया + गिलोय की 2 किग्रा.पत्तिया +अरंडी की 2 किग्रा.पत्तिया +करंज की 2 किग्रा.पत्तिया +हरी मिर्ची का पेस्ट 2 किग्रा.+250 ग्राम अदरक का पेस्ट +3 किग्रा. गाय का गोबर +5 लीटर गाय का मूत्र +200 लीटर पानी इसके लिए एक महीने तक सब को मिश्रित करके सड़ने के लिए रख देते है फिर इसे अच्छी तरह हिला के उपयोग करना चाहिए यह 500 लीटर/हक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए इसके प्रयोग करने से कीट व रोगों की नियंत्रित किया जा सकता है।

(4) बीजम्रत – इसे बनाने के लिए 5 किग्रा.गाय का गोबर ले कर उसे एक कपडे मै बांध कर पानी से भरे किसी बर्तन मै रख दे ताकि गोबर के सारे घुलनशील पदार्थ उस पानी मै आ जाये, अब 50 ग्राम चूने की की मात्रा को 1 लीटर पानी में अलग से घोल के रख दे और 12 से 15 घंटे बाद अब गोबर के कपडे को अच्छी तरह निचोड़ ले अब इसमें 5 लीटर गौ मूत्र मिलाये साथ ही इसमें वह चुने का पानी भी मिलाये और कुछ मिट्टी (जंगल की मिट्टी या ऐसी मिट्टी जहा पर लोग ज्यादा आते जाते न हो) मिला कर अब इसे फिर से 8 – 12 घंटे के लिए रख देते है अब इस घोल को छान ले और बीजोपचार करे बीजोपचार के लिए बीजम्रत का प्रयोग सिर्फ उतना ही करे जितने मै यह बीज पर एक पूरी परत के रूप मै न बन जाये ।